6

शिक्षा में कला-संग्रहालयों, वीथियों और शैक्षिक भ्रमण की भूमिका

अक्षय कुमार दीक्षित*

प्रस्तुत लेख में शिक्षा के क्षेत्र में हमारी धरोहरों का उपयोग कैसे और क्यों किया जाए, इस बारे में चिंतन को प्रेरित करने का प्रयास किया है। इस लेख में प्रयुक्त 'संग्रहालय' शब्द का प्रयोग केवल संग्रहालयों के लिए ही नहीं बल्कि इसी प्रकार के अन्य स्थलों के लिए भी किया गया है। संग्रहालय तक जाना संभव न हो तो क्या संग्रहालय को विद्यालय तक लाया जा सकता है? यदि हाँ तो कैसे? कुछ इसी तरह के प्रश्नों के उत्तर देता है यह लेख।

एक विद्यार्थी के रूप में मैं पुस्तक में छपे मोहनजोदड़ो से मिली ऐतिहासिक कलाकृतियों से बहुत आकर्षित होता था। दाढ़ी वाला पुजारी, नर्तक लड़की, मुहरें, खिलौने, गांधार कला के नमूने के रूप में दी गई बुद्ध की मूर्ति, इन सबने मेरे मस्तिष्क पर एक भव्य छाप छोड़ी। लेकिन मुझे उन वस्तुओं को प्रत्यक्ष अपनी आँखों से देखने का अवसर अनेक वर्षों बाद मिला, जब मैं स्वयं एक दिन दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में गया। इस यात्रा ने मेरे मस्तिष्क के कल्पनालोक का विस्तार तो किया ही, साथ ही अनेक भ्रांतियों को ध्वस्त भी कर दिया। मैं यह देखकर हैरान-सा रह गया कि पुस्तकों में दिए गए चित्र उन वस्तुओं के सौंदर्य, आकार और बनावट के साथ न्याय कर पाने में लगभग असफल रहे थे। उदाहरण के लिए, नर्तकी की मूर्ति मेरी कल्पना से कहीं अधिक छोटी थी और उसकी बनावट की सूक्ष्म कलाकारी उसे सामने देखकर ही महसूस की जा सकती थी। उस अनुभव ने मुझे ऐसा झकझोर दिया कि मैं उस पूरे सप्ताह हर रोज़ संग्रहालय में गया और प्रत्येक कलाकृति को ध्यान से, आराम से देखा, उसके बारे में पढ़ा और उसके सौंदर्य का आनंद लिया।

इस अनुभव में एक प्रश्न छिपा है। विद्यालयों में पढ़ने वाले कितने प्रतिशत विद्यार्थी स्वयं संग्रहालयों, ऐतिहासिक इमारतों और वीथियों में जाने का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं? शायद नाममात्र के ही। फिर विद्यालयों में इस प्रकार के भ्रमण को अपने नियमित क्रियाकलापों का अंग क्यों नहीं बनाया जाता? संसाधनों की कमी है या इच्छाशक्ति की कमी है? या सबसे बुनियादी कमी है— इनके महत्त्व के प्रति जागरूकता की।

* *शिक्षक*, राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय, जी ब्लॉक, साकेत, नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

संग्रहालय के लाभ

शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करना

दुनिया के कई देशों में इस प्रकार के शैक्षिक भ्रमण, शैक्षिक कार्यक्रमों का अभिन्न अंग होते हैं। इन्हें अभिन्न अंग इसलिए बनाया गया है क्योंकि ये भ्रमण, शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं। ये भ्रमण केवल इतिहास या भूगोल जैसे विषयों से नहीं जुड़े हैं बल्कि भाषा, कला और अन्य विषयों से भी सीधे-सीधे जुड़े हैं।

संग्रहालयों का भ्रमण करते समय विद्यार्थी भाषा के विशिष्ट प्रयोग से परिचित होते हैं, वह शब्दावली जिसका प्रयोग संग्रहालयों के संदर्भ में ही किया जाता है। इससे बच्चों की भाषाई क्षमताओं और शब्दावली का विकास संभव हो पाता है।

सीखने की स्थिति प्रदान करना

आधुनिक दुनिया में संग्रहालय अपने दर्शकों के लिए बहुत व्यापक भूमिका निभाते हैं। संग्रहालय में दर्शक न केवल प्रदर्शित वस्तुओं को देखते हैं, उनकी सराहना करते हैं और उनका आनंद लेते हैं, बल्कि उनसे बहुत कुछ सीखते भी हैं। संग्रहालय दर्शकों को एक सीखने की स्थिति प्रदान करते हैं। सीखने की स्थिति एक ऐसा वातावरण है जिसमें सीखने को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक सभी तत्व मौजूद होते हैं। दर्शक जो कुछ संग्रहालयों में देखते और अनुभव करते हैं, वह उनके मस्तिष्क में संग्रहीत होता जाता है और एक लंबे समय तक वहाँ बना रहता है। संग्रहालय की यात्रा एक एकात्मक घटना के बजाय अनुभवों के संग्रह का प्रतिनिधित्व करती है। प्रदर्शनी हॉल, व्यवस्थित संग्रह, प्रदर्शित वस्तुओं के लेबल, स्कूल की कक्षा की यात्राएँ, स्कूलों के लिए ऋण सेवाएँ, शिक्षकों को प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, सचित्र व्याख्यान, फ़िल्म, यात्राएँ और प्रकाशन आदि विभिन्न साधनों के द्वारा संग्रहालय शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता कर सकते हैं।

संग्रहालय द्वारा सीखने की स्थिति स्कूलों जैसे औपचारिक शैक्षिक संस्थानों द्वारा प्रदान किए गए शैक्षिक अनुभवों से काफ़ी अलग होती है—

1. स्कूलों में मौजूद सीखने के साधन, जैसे—मौखिक निर्देश, मूल्यांकन आदि सीखने को नियंत्रित करते हैं जबकि संग्रहालय नियंत्रणरहित सीखने के लिए स्वतंत्र विकल्प प्रदान करता है।
2. संग्रहालयों में सीखना एक सहज और व्यक्तिगत प्रक्रिया है, जो दर्शक पर थोपा गया अनुभव नहीं है।
3. स्कूलों में कक्षा-कक्ष में पढ़ने-लिखने पर अधिक बल देते हैं जबकि संग्रहालय सौंदर्य और कलाओं को अधिक महत्त्व देते हैं। संग्रहालय सभी ज्ञानेन्द्रियों को सीखने की प्रक्रिया में शामिल करते हैं, उन्हें उत्तेजित करते हैं, प्रेरणा देते हैं और कलात्मक अभिरुचि का विकास करते हैं।

सराहना के कौशल का विकास

स्कूलों में कला शिक्षण का उद्देश्य बच्चों की रचनात्मक क्षमताओं और उनके सराहना कौशल को विकसित करना है। इन उद्देश्यों को संग्रहालय और ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण द्वारा भी प्राप्त किया जा सकता है। संग्रहालय कला के प्रति विद्यार्थियों को संवेदनशील बनाता है और उन्हें एक विशेष युग में

© NCERT not to be republished

जीवन से जुड़ी कलाओं की झाँकी दिखाता है। यह झाँकी कला के उत्पाद रूप के साथ-साथ प्रक्रिया के रूप में भी हो सकती है क्योंकि संग्रहालय विभिन्न कार्यशालाओं के द्वारा कलाकारों और विद्यार्थियों के बीच आदान-प्रदान द्वारा सीखने का अवसर भी प्रदान करते हैं। संग्रहालय इस प्रकार की स्थितियों का सृजन करते हैं जिनमें दर्शक को प्रदर्शित कलाकृतियों की आवश्यक विशेषताओं और उस समय की भावना को पहचानने में मदद मिलती है, जिसमें उन्हें बनाया गया था। यदि छोटे विद्यार्थियों को संग्रहालय आदि का सुखद अनुभव प्राप्त करने का अवसर दे दिया जाए तो संभव है कि बड़े होकर भी उनमें यह जुड़ाव बना रहेगा।

बौद्धिक उत्तेजना और मनोरंजन

संग्रहालयों का महत्त्व यह है कि उनमें दुनिया की सबसे दुर्लभ, सबसे सुंदर और सबसे प्राचीन कलाकृतियों को सरलता से देखा जा सकता है और उनका अध्ययन किया जा सकता है। क्या आप संग्रहालयों के अतिरिक्त कहीं और 5000 वर्ष पुराने खिलौने या 1000 वर्ष पुरानी पोशाक देख सकते हैं? और क्या कहूँ विश्व-प्रसिद्ध कलाकृति, जैसे— अमृता शेरगिल की कृति को देखा जा सकता है, उत्तर है—नहीं। जब दर्शक सैकड़ों वर्ष पुरानी वस्तु को देखते हैं तो बौद्धिक रूप से उसी समय की यात्रा कर रहे होते हैं। संग्रहालय कुछ पलों के लिए टाइम मशीन बन जाता है और दर्शक को काल-यात्री बना देता है। संग्रहालय बौद्धिक उत्तेजना और मनोरंजन का एक स्रोत है। भ्रमण रोज़मर्रा की उबाऊ दिनचर्या को तोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य भी करता है।

संग्रहालय का जीवन से जुड़ाव

वीथियों, संग्रहालयों, पुरातात्विक स्थलों, ऐतिहासिक इमारतों आदि का भ्रमण विद्यार्थियों को अवसर देता है कि वे कला को अपने जीवन, अपने पूर्व अनुभवों आदि से जोड़ सकें। इन भ्रमणों के दौरान, विद्यार्थी खुलकर अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित और स्वतंत्र होते हैं और इस प्रकार वे अपने नए अनुभवों को संसाधित करते हैं।

विद्यार्थियों को स्कूल से बाहर ले जाना और उन्हें उनके सांस्कृतिक परिवेश के अन्य पहलुओं से परिचित कराना तो महत्वपूर्ण है ही, ऐसी जगहों पर कैसे व्यवहार करना है, यह भी अपने आप में सीखने का एक महत्वपूर्ण अनुभव है।

सांस्कृतिक विरासत को आत्मसात करना

प्रत्येक समाज की अपनी सांस्कृतिक विरासत होती है। विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से परिचित करवाना, उस विरासत में शामिल करना, उन्हें इसे समझने में सक्षम बनाना, इसका आनंद लेने देना, इस पर सवाल उठाना, इसे बेहतर बनाना, इसका उपयोग करना, इसकी रक्षा करना, इसे समृद्ध करना आदि कला शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं। ये भ्रमण बच्चों को अपनी सांस्कृतिक विरासत के संपर्क में लाने का सुअवसर देते हैं

गतिविधियों का केंद्र संग्रहालय

संग्रहालय वस्तुओं की प्रदर्शनी मात्र नहीं है। विद्यार्थी संग्रहालय में कलाकृतियों को देखने के साथ-साथ उन

© NCERT not to be republished

पर चर्चा कर सकते हैं, उनके चित्र बना सकते हैं, उन्हें छू सकते हैं (जहाँ अनुमति हो), उनके बारे में प्रदर्शित जानकारी पढ़ सकते हैं और उनके बारे में उपलब्ध जानकारी सुन सकते हैं। विद्यार्थी कलाकृतियों का निर्माण और उनका रखरखाव कैसे किया जाता है, इसके बारे में जानकर कार्यशालाओं द्वारा अपनी कुशलताओं का विकास भी कर सकते हैं। वीथियाँ आदि कक्षा में प्राप्त कुशलताओं के पूरक के रूप में भी कार्य कर सकती हैं। शिक्षक भ्रमण से पहले या बाद में, चर्चा आदि के द्वारा विद्यार्थियों के ज्ञान और कुशलताओं को और मज़बूत कर सकता है। जिन चीज़ों को विद्यार्थियों ने केवल पढ़कर-सुनकर या केवल शिक्षक के बताने मात्र से स्वीकार कर लिया था, भ्रमण द्वारा उन वस्तुओं को देखने और अनुभव करने का अवसर मिलता है।

संग्रहालयों तक कैसे जाएँ?

इतना उपयोगी होने के बावजूद विद्यार्थी संग्रहालयों तक क्यों नहीं जा पाते? क्या इसका कारण आर्थिक है या जानकारी का अभाव? अधिकतर स्थितियों में इसका कारण जानकारी का अभाव है।

लगभग सभी संग्रहालय विद्यालयों और स्कूलों के स्वागत के लिए पलकें बिछाए तत्पर रहते हैं। वे सरकारी या आर्थिक रूप से कमज़ोर बच्चों के संस्थानों के विद्यार्थियों के लिए नि:शुल्क भ्रमण का आयोजन ही नहीं करते, बल्कि आवागमन के लिए नि:शुल्क वाहन भी उपलब्ध करवाते हैं। उदाहरण के लिए, नयी दिल्ली स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय और आधुनिक कला संग्रहालय ऐसी व्यवस्था उपलब्ध करवाते हैं। इसके अतिरिक्त, संग्रहालय नि:शुल्क *गाइडेड टूर* यानी संग्रहालय में गाइड की सुविधा भी नि:शुल्क उपलब्ध करवाते हैं। अत: यदि आपके शहर में संग्रहालय है, तो उनसे संपर्क करके इन सुविधाओं का लाभ उठाया जा सकता है।

लेकिन यदि आपके शहर में संग्रहालय नहीं है, तो क्या किया जाए? इसके लिए संग्रहालय को ही आप अपने विद्यालय में आमंत्रित कर सकते हैं।

आप अपने विद्यालय में स्थानीय कलाकृतियों, जैसे— कंघे, हाथ के पंखे, खिलौने आदि का संग्रह बच्चों से ही करवाकर बच्चों का अपना संग्रहालय बनवा सकते हैं। आप किसी स्थानीय कलाकार को उसकी कलाकृतियों के बारे में बातचीत करने के लिए विद्यालय में आमंत्रित कर सकते हैं। आप यदि किसी संग्रहालय में जाएँ तो वहाँ से कलाकृतियों के प्रतिरूप (मॉडल) खरीदकर उन्हें विद्यालय में ले जा सकते हैं।

कई संग्रहालयों की वेबसाइट उस संग्रहालय के *वर्चुअल टूर* यानी आभासी भ्रमण की सुविधा उपलब्ध कराती हैं। (उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय कला संग्रहालय की वेबसाइट) आप अपने मोबाइल फोन, टैब या स्मार्ट-बोर्ड द्वारा इस सुविधा का लाभ बच्चों तक पहुँचा सकते हैं।

वेबसाइट ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा आप दुनियाभर के संग्रहालयों का भ्रमण कर सकते हैं। भ्रमण के अतिरिक्त इनके माध्यम से आप अनेक नि:शुल्क सामग्री को डाउनलोड करके उसका उपयोग कर सकते हैं, जैसे— संग्रहालयों की पत्रिकाएँ, बुलेटिन, चित्र, कार्य-पत्रक, ऑनलाइन शिक्षण संसाधन आदि। उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय संग्रहालय की वेबसाइट

© NCERT not to be republished

पर हड़प्पा, पशु-पक्षियों, सिक्कों आदि के पॉवर पॉइंट प्रेज़ेन्टेशन (पी.पी.टी.) नि:शुल्क उपलब्ध हैं। एक शिक्षक के रूप में इन संसाधनों का उपयोग करके अपनी कक्षा की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को समृद्ध किया जा सकता है।

कई संग्रहालय अनेक अल्पकालिक और पूर्णकालिक पाठ्यक्रम भी उपलब्ध करवाते हैं। एक शिक्षक और एक विद्यार्थी के रूप में इन पाठ्यक्रमों में भी प्रवेश लिया जा सकता है।

निष्कर्ष

संग्रहालय, वीथियाँ, सांस्कृतिक केंद्र, शैक्षिक भ्रमण आदि का किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम में अभिन्न स्थान होता है। जानकारी के अभाव में विद्यालय अपने परिवेश में उपलब्ध इन अमूल्य संसाधनों का लाभ उठाने से चूक जाते हैं। अपने आस-पास के इन संसाधनों के बारे में थोड़ी छानबीन करके हम अपने शैक्षिक उद्देश्यों को अधिक बेहतर रूप में प्राप्त कर सकते हैं।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2018. *कला शिक्षा पर प्रशिक्षण पैकेज भाग 1 और 2*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

http://nationalmuseumindia.gov.in

http://ngmaindia.gov.in/

© NCERT not to be republished